स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविदयालय, नांदेड
तथा भाषाविभाग हरिहर प्रतिष्ठान द्वारा संचलित

गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी (रात्र) वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

के तत्वावधान में स्व. गोविंदलाल जोशी की स्मृति में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

साहित्य के नवप्रवाह

मुख्य सम्पादक
डॉ. सुजाता चव्हाण
प्र. प्रधानाचार्य

सम्पादक
प्रा. आरेफ शेख
प्रा. नयन भादुले
प्रा. अनिता चौधरी

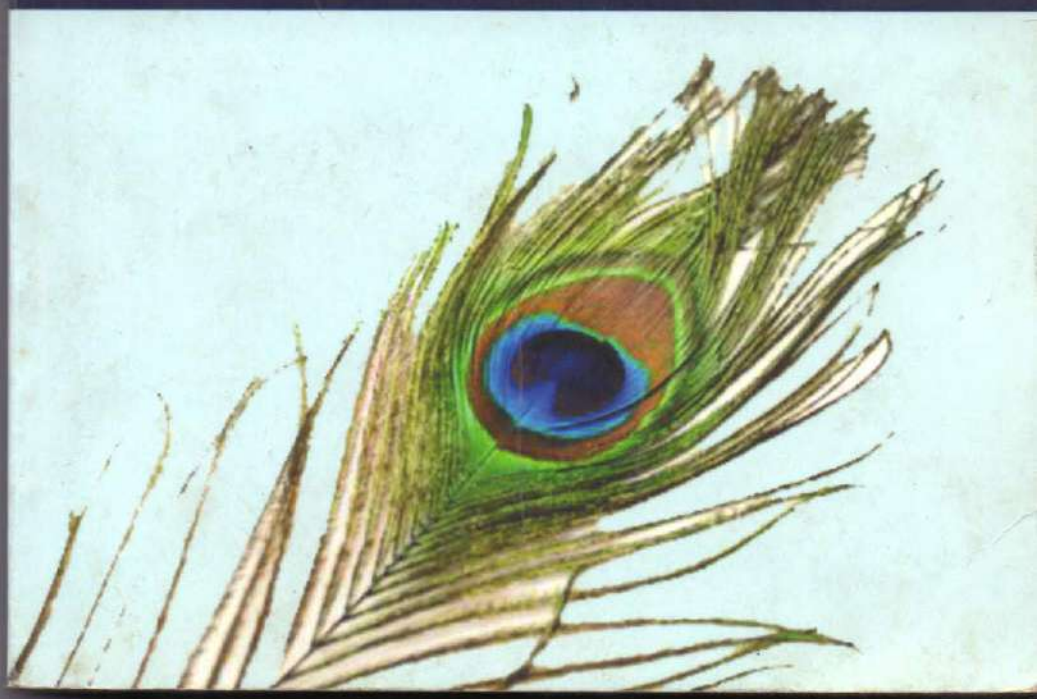

साहित्य के नवप्रवाह

- **डॉ. सुजाता वल्हाण,** मुख्य सम्पादक
  प्रा. आरेफ शेख, सम्पादक
  प्रा. नयन भादुले, सम्पादक
  प्रा. अनिता चौधरी, सम्पादक

- **प्रकाशक:**
  विझक्राफ्ट पब्लिकेशन्स् ॲन्ड डिस्ट्रीब्युशन प्रा. लिमिटेड,
  १२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर- ४१३००१
  भ्रमणध्वनी - ०९६३७३३५५५१, ०७०२०८२८५५२
  ई-मेल - wizcraftpublication@gmail.com

- **मुद्रक:**
  पालवी प्रिंटर्स,
  १२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर-४१३००१

- ISBN: ९७८-९३-८६०१३-८३-५

- **रुपये: ५००/-**

सर्व हक्क सुरक्षित (या पुस्तिकेतील प्रकाशित माहिती पूर्व परवानगी शिवाय कुठल्याही माध्यमाव्द्रारे पुर्न प्रकाशित करता येणार नाही.)

या पुस्तकातील प्रकाशित माहिती, मते, विधान, विचार इत्यादी लेखकांचे वैयक्तिक असून लेखकांने व्यक्त केलेली मते, माहिती, विधाने, विचार, इत्यादी बाबत प्रकाशक, मुद्रक आदी सहमत असतीलच असे नाही.

13.	'नयी कहानियों में किन्नर विमर्श' प्रा. चौधरी अनिता विश्वनाथ	67
14.	'कस्माई सिमोन' : लिव इन रिलेशन का नया आख्यान प्रा.नयन भादुले-राजमाने	72
15.	भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति डॉ. ईश्वरप्रसाद रामप्रसादजी बिदादा	80
16.	आदिवासी जीवन केंद्रित हिंदी उपन्यास : समय, समाज और संवेदना प्रा.बोडखे एच.डी.	84
17.	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श प्रा. डॉ. शहाजी चव्हाण	91
18.	हिन्दी–मराठी दलित आत्मकथाओं मे सामाजिक चेतना डॉ. व्ही. पी. चव्हाण	95
19.	परम्परा में अपने को खोजती स्त्री अनामिका के काव्य संदर्भ में आरिफ जमादार	100
20.	'नारी विमर्श - एक दृष्टिक्षेप' (विशेष संदर्भ : शेष कादंबरी - अलका सरावगी) प्रा. डॉ. गोपाल बाहेती	105
21.	आदिवासी साहित्य विमर्श (विशेष संदर्भ – अल्मा कबुतरी) प्रा. डॉ. कडेकर सी.जी.	111
22.	नारी के मानवी रूप का अनुशिलन प्रा.डॉ. एस.एस. कदम	116
23.	'हिन्दी कहानी में नारी विमर्श' प्रा. डॉ. राजकुमार पंडितराव जाधव	121
24.	वीरागंना झलकारीबाई ..... एक दृष्टिक्षेप ! प्रा.डॉ.मा.ना.गायकवाड	125
25.	'स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिंदी उपन्यास साहित्य' (शाल्मली के विशेष संदर्भ में) डॉ. पुष्पलता अग्रवाल	131
26.	ग्लोबल गांव के देवता विशेष संदर्भ में डॉ. विजयकुमार कुलकर्णी	136
27.	दलित विमर्श डॉ.उर्मिला भिकाजीराव शिंदे	141

13
'नयी कहानियों में किन्नर विमर्श'

प्रा. चौधरी अनिता विश्वनाथ, हिंदी विभाग, गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी (रात्र) वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

आज विश्व में मानव अधिकारों की चर्चा ने आंदोलन का रूप लिया है। हाशिए के समाज को मुख्यधारा में लाने की अनेक कोशिशें हो रही है। दलित, आदिवासी, स्त्री आदि के अधिकारों के लिए जो प्रयास हुए है उसके परिणाम आज दिखाई दे रहे है। नाम लेने के लिए वैश्विक धरातल पर प्रयास हो रहे है। भारत वर्ष में यह बात स्पष्ट रूप में लक्षित हो रही है। किन्नर या हिजड़ों के लिए तिसरे लिंग के रूप में इनके अधिकारों को मान्यता दि गई है। इनके अस्तित्व को पहली बार सशरूक पहचान माली है। सुप्रिम कोर्ट ने केंद्र और सभी राज्य सरकारों को सभी ट्रांस पीपल को कानुनी पहचान देने का आदेश दिया है। देश में लगभग किन्नरों की पचास लाख संख्या है। इतनी संख्या होने के बावजुद उन्हें सभ्य कहनेवाले समाज ने हाशिए पर रखा है। लेकिन अब इस हाशिए को मुख्यधारा में लाने के प्रयास तेज हुए है। चिकित्सा के माध्यम से पुरूष या स्त्री बनने का और बच्चे को गोद लेने का अधिकार भी उन्हे दिया है। किंतु समाज आज भी उनके अधिकारों और अस्तित्व को अनदेखा कर रहा है। थर्ड जेंड़र के साथ मानव होते हुए भी जानवरों सा व्यवहार हो रहा है। माँ बाप के साथ ही साथ समाज भी उन्हें नकार रहा है। सरकार द्वारा सुविधाएँ दी है परंतु अज्ञानतावश वे अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर पा रहे है। नौकरी का न मिलना, बेरोजगारी, शिक्षा का अभाव, समाज का नकार जैसी अन्य समस्याएँ। समाजिक व्यवस्था के कारण वे अंदर से टुट रहे है। ऐसे में उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाना और उनके प्रति समाज में सद्भावना लाना एक चुनौती है।

भारत के विभिन्न राज्यों में थर्ड जेंडर या किन्नरों की स्थिती, संस्कृति और उनसे जुड़ी परंपराएँ अलग-अलग है। स्त्री और पुरूषो से और समाज से बाहर रहने वाले इस समुदाय के लिए हमारे प्राचीन ग्रंथों में 'किन्नर' शब्द का प्रयोग किया जाता है। उर्दू और हिन्दी में इनके लिए 'हिजड़ा' शब्द भी प्रयुक्त होता है। मराठी में 'हिजड़ा' और 'छक्का' शब्दों का प्रयोग उनके शब्दों का प्रयोग मिलता है। भारतीय भाषाओं में

शब्द कोई भी हो संकल्पना वही है।

साहित्य के क्षेत्र में वर्तमान समय में लिंग निरपेक्ष समाज, बहिष्कृत किन्नर या थर्ड जेंड़र समुदाय पर चिंतन और चर्चा तेज हुई है। हिन्दी में नई सदी के आरंभ से वह विमर्श प्रभावी रूप से दिखाई दे रहा है। इसके परिणाम स्वरूप नीरजा से दिखाई दे रहा है। इसके परिणाम स्वरूप नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदिप', निर्मला भुराड़िया का 'गुलाम मंड़ी' प्रदीप सौरभ की 'तिसरी ताली' और महेंद्र भीष्म का किन्नर कथा और चित्रा मृदुगल का 'पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नाला सोपारा' आदी उपन्यासों के साथ-साथ कहानियों में बिन्दा महाराज, किन्नर, इज्जत के रहबर, नेग, बीच के लोग, त्रासदी, ई मुर्दन का गाँव, हिजड़ा आदी में किन्नर व्यथा का यथार्थ परिलक्षित होता है। किन्नरों पर लिखी गई कहानियाँ उनकी व्यथा-कथा को कहती नज़र आती है। हिन्दी कथा साहित्य में अभी उतनी मात्रा में किन्नर कहानियाँ नहीं लिखी गयी है जितनी और विषयों पर लिखी जा रही है। लेकिन हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श पर चर्चाए हो रही है उसी के परिणाम स्वरूप हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श की कहानियाँ लिखी और पढ़ी जा रही है।

किन्नर विमर्श की कहानियों की बात करें तो शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'बिन्दा महाराज' एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी में तृतीय लिंग की समस्याएँ और उनका यथार्थ चित्रित हुआ है। शिवप्रसाद जी ने किन्नरों के दुःख, दर्द, संताप, मोह अंधविश्वास, उनकी विडंबना आदि को उजागर किया है। कहानी के मुख्यपात्र बिन्दा के माध्यम से पितादवारा तिरस्कार, पती का सुख, पत्नी की प्रतीक्षा, बेटा-बेटी का मोह आदि से वंचित होने की मानसिक पीड़ा को कहानी में उकेरने का प्रयास किया है। बिन्दा कहानी में इन सभी समस्याओं से लड़ता, भिड़ता और संघर्ष करता हुआ अपने अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास करता है की मैं भी इस समाज का अंग हुँ, एक इन्सान हुँ।

गरिमा संजय दुबे की कहानी 'पन्ना बा' किन्नर विमर्श की एक मजबुत कहानी है। इसमें किन्नर की दारूण स्थिति का चित्रण किया गया है। किन्नर को समाज से जीते हुए नकार, अपमान का सामना करना पड़ता है। लेकिन मरने के बाद भी उसे, दर्द के सिवाय और कुछ भी नहीं मिलता। उसकी लाश को जूतों से पीटा जाता है। "किन्नर की मौत पर उसकी लाश को जूतों से पिटाई की खबर पढ़ही रही थी की पता चला पन्ना बा मर गया।" इस प्रकार कहानी में किन्नर की उस स्थिती का भी जिक्र किया गया है जिसमें वह समाज से वंचित रहा है। इसे व्यक्त करते हुए गरिमा जी

कहानी में लिखती हैं, "कोई काम पर रखे नहीं, कोई माता पिता इस अभिशाप को साथ रखने को राजी हीं, कोई नौकरी नहीं, कोई पढ़ाई नहीं बेचारा मनुष्य जिए भी तो कैसे? कैसे देह से परे हो, फिर भी जीता है एक किन्नर। 'पन्ना बा' कहानी केवल किन्नर व्यथा को गढ़ती हो नहीं बल्कि वह मानव के मन-मस्तिष्क पर प्रभाव ही डालती है। संसार में किन्नर को लेकर मान्यताएँ हैं कि उसकी दुआओं में असर होता है।" "किन्नर की दुआ की कोई होड़ नहीं और उसकी बद्दुआ का कोई तोड़ नहीं। लेकिन विडंबना यह है की समाज केवल उन्हें दुवाओं के लिए याद करता है। उन्हें इनसान के रूप में बहुत कम लोग देखते हैं।"

'नेग' कहानी किन्नर विमर्श में उल्लेखनीय कहानी है। जो उनके परम्परागत रहन-सहन और विवाहों में उनकी नेग मांगने की कथा पर आधारित है। किन्नरों का किसी के विवाह में या किसी के घर बेटा होने पर नाच गाना और नेग माँगना आदि का यथार्थ इस कहानी में चित्रित हुआ है। इस कहानी में लड़की होने की विडम्बना को भी दर्शाया गया है। बेटा होने पर किन्नरों को गवाना और नेग देना आदि मान्यताएँ भी इसमें प्रकट हुई है। लेकिन बेटी होने पर उन्हीं किन्नरों को प्रताड़ित किया जाता है। इस प्रकार यह कहानी में बेटा बेटी के भेदभाव के साथ किन्नरों की समस्याओं को व्यक्त करती है। 'अगर इसके जन्म का नेग नहीं दे सकते तो इसी को ले जाओ...' इसने यह अपराध किया है कि यह लड़की बनकर पैदा हुई है। इसके साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है जैसे वह खुद मेरी कोख में आ गई। इस तरह समाज में मानव - मानव के साथ भेदभाव कर रहा है। किन्नर समाज इस भेदभाव को मिटाने का प्रयास कर रहा है। वंचित होते हुए भी खुद माँ की ममता से अछुता रह कर, पिता के प्रेम से वंचित, भाई के दुलार से दुर रहकर भी इसतरह के भेदभाव को भुलकर सब को आपस में मिलकर रहने की बात भी किन्नर कहता है। 'नेग' कहानी में भी बताया गया है कि किन्नर बेटी के जन्म पर भी खुशी से नाचना चाहता है - "लो चाची... हमारी तरह से नेग... तुम्हारे घर में लक्ष्मी आई है... यह बताने में शर्म कैसी?" इस तरह तृतीय लिंग समाज अछुत रहकर भी समाज में उस अछुतेपन को दुर करने का प्रयास कर रहा है। समाज में अपने प्रति हो रहे अत्याचारों, शोषण, हित-भावनाओं से ग्रसित समाज के प्रति अपने व्यथाओं को वह प्रदर्शित करने की कोशिश कर रहा है।

पूनम पाठक की 'किन्नर' कहानी लघुकहानी होते हुए भी महत्वपूर्ण है। यह कहानी एक और किन्नरों के प्रति सभ्य कहलानेवाले समाज की मानसिकता, सोच को उजागर कहती है तो दुसरी ओर किन्नरों की मानवीयता को भी व्यक्त करती है। बस में

बैठे किन्नर के बगल वाले सीट पर मानसी बैठना नहीं चाहती। अपनी सीट के बगल में बैठे हुए किन्नर को देखकर कुछ झिझकते हुए वह कंडक्टर को दुसरी सीट माँगती है। सीट न मिलने पर वह खड़ी हो जाती है। लेकिन बस में जब उसे लड़के छेड़ने लगते हैं तब किन्नर ही उसकी रक्षा करता है। बसके बाकी लोग केवल तमाशा देखते हैं। किन्नर मानसी की रक्षा करता है किंतु तमाशा देखनेवाले उसे अपमानित करते हुए 'हिजड़ा' कहते हैं। इसपर मानसी व्यंग्य से कहती है, "हिजड़ा ये नहीं बल्कि आप सभी हो, जो अभी तक सारा तमाशा देख रहे थे, किसी हिन्दी फिल्म की तरह। कुछ देर और चलता तो शायद एम.एम.एस. भी बनने लगने पर मदत को एक हाथ भी आगे नहीं आता।" मानसी को किन्नर देवदूत लगता है। वह नम आँखों से किन्नर को धन्यवाद कहती है। इसप्रकार किन्नरों के प्रति सामाजिक धारणा और किन्नरों की मानवीयता का यथार्थ इस कहानी में चित्रित हुआ है।

किन्नर विमर्श की दृष्टी से श्रीकृष्ण सैनीकी 'हिजड़ा' एक मार्मीक और मानवीयता की अभिव्यक्ति हुई है। किन्नरों की मानसिक पीड़ाओं को भी इस कहानी में राघव और उसकी पत्नी निर्मला की मृत्यू को जाती है। परिवार में तीन-चार साल का बेटा सुनील की बात को हमेशा टाल देता है। ऐसे में रजिया जो कि एक हिजड़ा है यह जिम्मेदारी खुद लेती है। निर्मला से अपनापन होने के कारण रजिया सुनील का सारा भार अपने उपर लेती है। सुनील पढ़लिखकर बढ़ा अधिकारी बन जाता है। सभ्य कहलानेवाले समाज की आलोचना से सुनिल को बचाने के लिए रजिया अपनी पहचान छिपाकर रखने के लिए हेड मास्टर को कहती है। अपना खून देकर वह सुनिल की जान भी बचाती है। लेकिन विडम्बना यह होती है कि वह अपनी पहचान उजागर नहीं कर सकती। "आखिर इस मानसिक रूप से हिजड़ा हो चुकी दुनिया में वह किस-किस को जवाब देती।"

इस प्रकार कह सकते है कि किन्नर विमर्श अभी अपरिपक्व अवस्था में है। समाज की वैचारिकी अभी इसे स्वीकार करने में हिचक रही है। सुप्रिम कोर्ट की दखल के बाद इस स्थिती में परिवर्तन नजर आ रहा है। किन्नरों को स्वतंत्र पहचान मिलने के कारण उनमें चेतना निर्माण हो रही है। भारतीय साहित्य की जब बात करते है तो हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श की पहल अब तेज हुई है। किन्नरों को लेकर कहानियों का सिलसिला शुरू हुआ है। इन कहानियों में तमाम कहानियां उनकी मजबुरियों, व्यथाओं, शोषण, पीड़ा और उनसे हो रहे भेदभावों को दर्शाती है। किन्नर भी इन्सान ही है प्रकृति और समाजद्वारा सताने पर अब भी शेष है। इस मानवीयता के रक्षा की बात

ये कहानियाँ उठाती हैं। एक ओर ये कहानियाँ किन्नर यथार्थ को व्यक्त करती है तो दुसरी ओर उनमें आ रही चेतना को। आज हिन्दी कहानियों में तृतीय लिंग चिंतन ने एक आंदोलन का रूप लिया है। किन्नरों को प्रमुख धारा में लाने की दृष्टी से इस आंदोलन की निश्चित ही उल्लेखनीय भूमिका रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. किन्नर - पुनम पाठक, वांग्मय (त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका), संपा. एम फिरोज अहमद, जनवरी - मार्च २०१७, पृ. १४९.
२. हिजड़ा - श्री कृष्ण सैनी (त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका), संपा. एम. फिरोज अहमद, जनवरी - मार्च २०१७, पृ. १२४
३. नेग - डॉ. लवलेश दत्त, वांग्मय (त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका), संपा. एम. फिरोज अहमद, जनवरी - मार्च २०१७, पृ. ११७
४. वही, वही, वही, पृ. ११७
५. पन्नाबा - गरिमा संजय दुबे, वांग्मय (त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका), संपा. एम. फिरोज अहमद, जनवरी - मार्च २०१७, पृ. १२०
६. विमर्श का तीसरा पक्ष - विजेंद्र प्रताप / रविकुमार गोड

महाविद्यालय के संदर्भ में

श्री. हरिहर प्रतिष्ठान संचलित गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी (रात्र) वाणिज्य महाविद्यालय की स्थापना वर्ष २०१२ में हुई। आर्थिक और सामाजिक रुप से पिछडे क्षेत्र को उच्च शिक्षा की सुविधाएं प्रदान करने के लिए एक नेक इरादे के साथ स्थापित किया गया है। इस संस्था को अस्तित्व मे लाने के लिए श्री धनराज जोशी जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पुरे मराठवाडा क्षेत्र में यह पंहला रात्र महाविद्यालय है। 'काम करते हुए सीखना' हमारे संस्था का ब्रिदवाक्य है। महाविद्यालय ने शैक्षणिक वर्ष २०१८-१९ में १८ फरवरी २०१९ को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया है।

महाविद्यालय की प्रमुख विशेषताए

- शिक्षा के प्रवाह से दुर रहनेवाले छात्रों को उस प्रवाह में सम्मिलित करने वाला पहिला रात्र वाणिज्य महाविद्यालय है।
- अभ्यासक्रम अंग्रेजी के साथ - साथ मराठी माध्यम का भी चूनाव।
- NPTL लोकल चॅप्टर रखनेवाला देश का एकमात्र रात्र वाणिज्य महाविद्यालय
- अत्यावश्यक आधारिक संरचना, सुसज्ज संगणक प्रयोगशाला, व्यवसाय प्रयोगशाला, अच्छा पर्यावरण तथा अनूकूल परिसर
- सामाजिक खेल और सांस्कृतिक गतिविधीयों में छात्रों की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

WIZCRAFT
Publications & Distribution Pvt. Ltd.
Registered Office:
129/498, Vasant Vihar, Near Old Pune Naka, Solapur- 413 001 (Maharashtra) India
09637335551, 07020828552 E-mail:wizcraftpublication@gmail.com

ISBN 978-93-86013-83-5
9 789386 013835

Rs. 500/-